Dr. Swarnim Ghosh
(Assistant Professor)
[Mathematical Economics]
Dept. Of Economics
Govt. Degree college
Jakhhini, Varanasi
****
Mob: 9451218739
****
E-mail:
swarnimghosh@gmail.com
****

ECONOMICS
(अर्थशास्त्र)

बी.ए - प्रथम वर्ष (B.A.-1ST YEAR)

प्रश्न पत्र –प्रथम (1ST PAPER)

*****

अर्थशास्त्र का क्षेत्र : विषय – सामग्री, प्रकृति या स्वभाव और सीमाएं

SCOPE OF ECONOMICS: SUBJECT –MATTER, NATURE AND LIMITATIONS

*****

इकाई—प्रथम(UNIT-1ST)

अर्थशास्त्र का क्षेत्र : विषय – सामग्री, प्रकृति या स्वभाव और सीमाएं

SCOPE OF ECONOMICS: SUBJECT –MATTER, NATURE AND LIMITATIONS

स्वघोषणा (Disclaimer/Self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगतज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |"

" The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/commercial purpose is strictly prohibited, the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

मूल शब्द(KEY WORDS)

१. व्यष्टिगत
२. समष्टिगत
३. आदर्शात्मक विज्ञान
४. वास्तविक विज्ञान
५. कला

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहूअक्टूबर२०२०

अर्थशास्त्र का क्षेत्र अत्यंत ही व्यापक है जहाँ यह एक तरफ एक फर्म , एक वस्तु आदि का अध्ययन तो वहीँ दूसरी तरफ सम्पूर्ण राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का अध्ययन जैसे; एक राष्ट्र की राष्ट्रीय आय का अध्ययन ; इसके अंतर्गत समाहित है | आर्थिक समस्याओं के निदान के लिए अर्थशास्त्र का ज्ञान होना अति आवश्यक है |

प्रो . मार्शल कहते हैं कि—"अर्थशास्त्र के अध्ययन का उद्देश्य ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना और व्यावहारिक जीवन, विशेष रूप से सामजिक क्षेत्र में पथ–प्रदर्शन करना है |"

सामान्यतया अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन बातों पर प्रकाश डाला जाता है और उसकी विवेचना की जाती है वे हैं:

(अ) अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री (SUBJECT–MATTER OF ECONOMICS)

(ब) अर्थशास्त्र की प्रकृति या स्वभाव (NATURE OF ECONOMICS)

(स) अर्थशास्त्र की सीमाएं (LIMITATIONS OF ECONOMICS)

यहाँ पर ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि अर्थशास्त्र की अर्थशास्त्र की विषय–सामग्री व उसका क्षेत्र ही अर्थशास्त्र की परिभाषाओं को भी निर्धारित करता है तथा अर्थशास्त्र की परिभाषाएं उसके क्षेत्र पर प्रकाश डालती है | अतः अर्थशास्त्र की परिभाषाएं व इसके क्षेत्र दोनों ही एक - दूसरे से परस्पर सम्बंधित हैं |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

चित्र : १.१ अर्थशास्त्र का क्षेत्र : अवधारणा नक्शा या वैचारिक आरेख

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

(अ) अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री (Subject matter on Economics)

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री या विषय –वस्तु का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से है | कहने का अर्थ यह है कि एक मनुष्य धन अर्जन में लगा रहता है व उस धन को इस प्रकार खर्च करना चाहता है जिससे उसके अधिकतम आवश्यकताओं की संतुष्टि हो सके | जहाँ एडम स्मिथ ने इसे धन का विज्ञानं कहा तो वहीँ प्रो मार्शल ने इसे सामाजिक विज्ञान या मानव कल्याण का विज्ञानं माना | जबकि प्रो रॉबिन्स ने सीमित साधन और असीमित आवश्यकताओं की व्याख्या करते हुए अर्थशास्त्र को मानव – व्यवहार के चुनाव करने केपहलू या निर्णयात्मक पहलू का अध्ययन या किफायत करने का विज्ञान व सीमित साधनों का आवंटन बताया |

आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन की सरलता व सुविधा के लिए अर्थशास्त्र के विषय सामग्री की पांच भागों में बाँट कर विवेचना की जाती है; वे हैं:

१. उपभोग (Consumption):

अर्थशास्त्र के इस क्षेत्र के अंतर्गत मनुष्य की असीमित आवश्यकताओं, आवश्यकताओं को पूर्ण करने की संतुष्टि या तुष्टीगुण व उपभोग से सम्बंधित विभिन्न महत्वपूर्ण नियमों व सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है | इस प्रकार मानव की असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इक्षा की तीव्रता के आधार पर वस्तु की उपयोगिता को नष्ट करना ही उपभोग कहलाता है | वर्त्तमान परिदृश्य में उपभोग का अर्थशास्त्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए इसे "अर्थशास्त्र का आदि और अंत " कहा जाता है | अतः उपभोग (उप + भोग) एक क्रिया है जिसके द्वारा एक उपभोक्ता अपनी प्रत्यक्ष संतुष्टि को पूर्ण करने हेतु वस्तुओं व सेवाओं का प्रयोग करता है व इसके उपयोगिता मूल्य का भुगतान करता है | सामान्य शब्दों में अपने आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किसी वस्तु या सेवा का उपयोग ही उपभोग है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यागमहिडअवट्रुबर२०२०

२. उत्पादन (Production):

अर्थशास्त्र के इस क्षेत्र के अंतर्गत उत्पादन का अर्थ, उसके प्रकार, आगत व निर्गत के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध, उत्पादन या उत्पत्ति के विभिन्न साधनों यथा; भूमि, श्रम, पूंजी, साहस व संगठन की विशेषताओं व कार्यक्षमता का अध्ययन, उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं, उत्पादन से सम्बन्धित विभिन्न तरीकों व सिद्धांतों का वृहत अध्ययन किया जाता है | चूँकि एक मनुष्य वैज्ञानिक रूप से न तो किसी वस्तु का निर्माण कर सकता है और न ही उसे नष्ट कर सकता है बल्कि वह केवल प्रकृति द्वारा प्रदत वस्तुओं को केवल अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयोगी बना सकता है | इस प्रकार, किसी वस्तु या सेवा में उपयोगिता का सृजन करना या वृद्धि करना ही उत्पादन कहलाता है | सामान्य शब्दों में, उपयोगिता का सृजन ही उत्पादन है | यहाँ पर ध्यान देने योग्य तथ्य यह है की केवल भौतिक उत्पादन जैसे गेहूं, चावल, कपड़ा ही अर्थशास्त्र में उत्पादन नहीं है बल्कि एक डॉक्टर, शिक्षक, वकील आदि के द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को भी उत्पादन माना जाता है |

३. विनिमय (Exchange):

अर्थशास्त्र के इस क्षेत्र के अंतर्गत सामान्यतया विनिमय का शाब्दिक अर्थ है; वस्तुओं की अदला–बदली अर्थात आवश्यकता के अनुरूप किसी वस्तु के बदले किसी दुसरे वस्तु का आदान–प्रदान | मुद्रा के अविष्कार ने वस्तु–विनिमय प्रणाली का स्वरुप बदल दिया और अब विनिमय का सम्पूर्ण कार्यों का सम्पादन मुद्रा के ही द्वारा होता है | इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का क्रय–विक्रय, कीमत–निर्धारण, बाजार की समस्या, मुद्रा, बैंकिंग, बीमा व व्यापर सम्बन्धी कार्यों का अध्ययन किया जाता है | इस प्रकार विनिमय के दो रूप हैं :

- ✓ **क्रय विनिमय (वस्तु खरीदने के बदले दिया जाने वाला मूल्य) |**
- ✓ **विक्रय विनिमय (वस्तु बेचने के बदले प्राप्त किया जाने वाला मूल्य) |**

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यालयमाहअक्टूबर२०२०

वहीं मौद्रिक दृष्टि से विनिमय के दो प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं; वस्तु विनिमय(वस्तु के वदले वस्तु) एवं मुद्रा विनिमय वस्तु के बदले मुद्रा) |

४. वितरण (Distribution):

अर्थशास्त्र के इस क्षेत्र के अंतर्गत उत्पादन के दौरान उसके पांच साधनों यथा; भूमि, श्रम, पूंजी, साहस व संगठन के द्वारा जब संयुक्त रूप से कार्य किया जाता है तो पारिश्रमिक/परिणामों की समस्या न्यायोचित बंटवारे के रूप में खड़ी हो जाती है, इस समस्या के निराकरण के लिए वितरण विभाग का सहयोग लिया जाता है | सामान्यतया बाँटने के कार्य को ही वितरण कहा जाता है | इस क्षेत्र के अंतर्गत राष्ट्रीय आय व गणना, लगान, मजदूरी, ब्याज, लाभ, न्यायोचित वितरण व आर्थिक कल्याण व इससे जुड़े सिद्धांतों व समस्याओं का अध्ययन किया जाता है |

५. राजस्व (Finance):

अर्थशास्त्र के इस क्षेत्र के अंतर्गत सार्वजनिक आय, सार्वजनिक व्यय, सार्वजनिक ऋण, व वित्तीय प्रशासन (बजट) सिद्धांतो, नियमों, समस्याओं व नीतियों का अध्ययन किया जाता है | यह अर्थशास्त्र का पांचवां विभाग है | वर्तमान समय में इस विभाग का कार्य अत्यधिक बढ़ने से इसका महत्व काफी बढ़ गया है |

स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र के ये पांचो विभागों का अलग–अलग अध्ययन किया जाता है परन्तु वास्तव में ये एक–दुसरे के पूरक हैं व इनमे अन्योंन्याश्रय सम्बन्ध है | अतः आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि-"अर्थशास्त्र सीमित साधनों के आवंटन का तथा रोजगार , आय और आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले तत्वों का अध्ययन करता है |"

✓ आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय सामग्री :

आधुनिक अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र की सम्पूर्ण विषय–सामग्री को मुख्यतः दो भागों में विभाजित कर अध्ययन करते है; वे है:-

१. सूक्ष्म या व्यष्टि या व्यष्टिगत अर्थशास्त्र (MICRO EONOMICS):

इसके अंतर्गत व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन किया जाता है जैसे एक उपभोक्ता, एक उद्योग, एक फर्म, एक उत्पादक आदि | अर्थशास्त्र के इस बिभाग के अंतर्गत मुख्य रूप से मांग, उत्पादन, उत्पादन फलन, कीमत निर्धाण, साधन कीमत निर्धारण, वितरण, आर्थिक कल्याण आदि के सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है |

२. व्यापक या समष्टि या समष्टिगत अर्थशास्त्र (MACRO ECONOMICS):

इसके अंतर्गत समस्त अर्थव्यवस्था या उससे सम्बंधित बड़े योगों या ओसतों या सामूहिक इकाइयों का

#अधिकारसुरक्षितविद्यागणमाहेश्वरीअक्टूबर२०२०

(ब). अर्थशास्त्र की प्रकृति या स्वभाव (NATURE OF ECONOMICS)

अर्थशास्त्र की प्रकृति या स्वभाव इस तथ्य की खोज करता है कि क्या अर्थशास्त्र विज्ञानं है ? क्या अर्थशास्त्र कला है या क्या अर्थशास्त्र विज्ञानं तथा कला दोनों है ? यदि हाँ तो कैसे ? इन तीन प्रश्नों का समुचित उत्तर ढूंढने का प्रयास अर्थशास्त्र की प्रकृति के अंतर्गत किया जाता है |

१. अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में (ECONOMICS AS SCIENCE)

❖ क्या अर्थशास्त्र विज्ञान है ?

अर्थशास्त्र विज्ञानं है या नहीं ? इस प्रश्न के समुचित उत्तर के लिए सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि आखिर विज्ञान का क्या अर्थ है ? किसी भी विषय के क्रमबद्ध अध्ययन को विज्ञानं कहा जाता है | इस प्रकार अर्थशास्त्र को विज्ञान या सामाजिक विज्ञानं माना जाता है | जिसके अंतर्गत व्यक्तियों के संगठित या सामूहिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है|

अर्थशास्त्र के विज्ञानं होने के निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं जैसे कि :

- अर्थशास्त्र तथ्यों का क्रमबद्ध रूप से अपने विषय सामग्रियों को पांच भागों में बाँट कर अध्ययन करता है | किसी भी विषय के विज्ञानं होने की पहली शर्त होती है की उसका अध्ययन क्रमबद्ध होनी चाहिए जिससे की तथ्य स्वयम सिद्ध हो सके | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है |
- अर्थशास्त्र के अपने कई आर्थिक नियम और सिद्धांत हैं यथा; मांग का नियम, पूर्ति का नियम, सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम, सम सीमांत उपयोगिता नियम, पैमाने का प्रतिफल, परिवर्तनशील अनुपात का नियम आदि | किसी भी विषय के विज्ञानं होने की दूसरी शर्त यह है कि उसके अपने नियम व सिद्धांत होने चाहिए जो कारण–परिणाम के सम्बन्ध को स्पष्ट कर सके | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है |
- अर्थशास्त्र में मुद्रा–रूपी मापदंड परिणामों को निश्चित रूप प्रदान करने में सहायक है |किसी भी विषय के विज्ञानं होने की चौथी शर्त यह है की उस विषय के अंदर तथ्यों को मापने की शक्ति

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यानमाहठाअट्ठअ२०२०

होनी चाहिए | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है |

- अर्थशास्त्र में गणित , अर्थमिति तथा सांखिकीय रीतियों का प्रयोग अनिवार्य है | यह भी अन्य विज्ञानों की भांति भावी अनुमान लगाने में सक्षम है | किसी भी विषय के विज्ञानं होने की पांचवीं शर्त यह है की उसमें भविष्यवाणी करने की क्षमता होनी चाहिए | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है |
- अर्थशास्त्र वस्तुपरक या वस्तुगत है क्योंकि इसके सिद्धांत या नियम अन्य विज्ञानों की भांति तथ्यों पर तर्क करता है | अतः यह विज्ञानं है |

अर्थशास्त्र को विज्ञानं मानने के विपक्ष में तर्क :

✓अर्थशास्त्रियों में मतभेद होना
✓निश्चित नियमों का प्रतिपादन नहीं
✓विषय –सामग्री के स्वभाव में विभिन्नता
✓प्रयोगशाला की सुविधा नहीं होना
✓संमकों का प्रवर्तित होना
✓मुद्रा का मापदंड शुद्ध न होना

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यद्धपि अर्थशास्त्र के विज्ञानं नहीं माने जाने के कई तर्क दिए गये हैं परन्तु इन तथ्यों का अवलोकन के पश्चात कोई ठोस आधार परिलक्षित नहीं होता है | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है परन्तु इसे निश्चित विज्ञानं नहीं कहा जा सकता है | अब प्रश्न यह उठता है कि यदि अर्थशास्त्र विज्ञानं है तो इसका स्वरुप क्या है ? क्या यह आदर्शात्मक विज्ञानं है ? क्या यह वास्तविक विज्ञानं है ? या क्या यह आदर्शात्मक या वास्तविक विज्ञानं दोनों है ?

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यागजमाडउदवटूर२०२०

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यद्धपि अर्थशास्त्र के विज्ञानं नहीं माने जाने के कई तर्क दिए गये हैं परन्तु इन तथ्यों का अवलोकन के पश्चात कोई ठोस आधार परिलक्षित नहीं होता है | अतः अर्थशास्त्र विज्ञानं है परन्तु इसे निश्चित विज्ञानं नहीं कहा जा सकता है | अब प्रश्न यह उठता है कि यदि अर्थशास्त्र विज्ञानं है तो इसका स्वरुप क्या है ? क्या यह आदर्शात्मक विज्ञानं है ? क्या यह वास्तविक विज्ञानं है ? या क्या यह आदर्शात्मक या वास्तविक विज्ञानं दोनों है ?

अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है कैसे (HOW ECONOMICS AS POSITIVE SCIENCE)

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों जे.बी.से, सीनियर, प्रो. रॉबिन्स , फ्रीडमैन ने अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान माना हैं| अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञानं है क्योंकि ये किसी समस्या का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करता है परन्तु समस्या के समाधान हेतु कोई आदर्श या परामर्श प्रस्तुत नहीं करता है | इसका सम्बंध 'क्या है ?', 'क्या था?' आदि से है | जिसकी सत्यता की जांच करने के साथ तथ्यों की भी खोज की जा सकती है जोकि यथार्थपरक होते हैं | यह केवल 'कारण' और 'परिणाम' के सम्बन्ध को स्थापित करता है | उदाहरण के लिए, देश में बजट –निर्माण के वक्त करों के निर्धारण के समय यह बताता है कि इसका देश के उत्पादन या धन के वितरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा? परन्तु यह इस बात की व्याख्या नहीं करेगा कि करों का लगाया जाना वांछनीय है अथवा नहीं | जैसे; उपभोग के क्षेत्र में उपयोगिता ह्रास नियम जो कि कारण और परिणामपर आधारित है, उत्पादन के क्षेत्र में उत्पत्ति ह्रास नियम, विनिमय के क्षेत्र में मांग और पूर्ति का नियम, वितरण के क्षेत्र में मजदूरी का सिधांत, राजस्व के अंतर्गत करों का सिद्धांत वास्तविक अर्थशास्त्र के उदाहरण हैं | इस प्रकार प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने तर्क के आधार, श्रम विभाजन के आधार, उदेश्यों के पूर्व निर्धारण, साम्य के तर्क के आधार पर अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञानं माना है |

अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान है कैसे (HOW ECONOMICS AS NORMATIVE SCIENCE)

प्रो. मार्शल , प्रो. पीगू, प्रो हाट्रे आदि अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को आदर्शात्मक विज्ञानं मानते हैं जो कि 'क्या होना चाहिए ' इसकी व्याख्या करती है जोकि मानव व्यवहार के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है |जैसे : उचित व्याज –दर

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यावाणीअक्टूबर२०२०

प्रो हाट्रे कहते हैं कि- " अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र से पृथक नहीं किया जा सकता है .... अर्थशास्त्र को केवल मूल्य –निरूपण तथा आचार सम्बन्धी आदर्श को दिया हुआ या स्वीकृति पर भी निर्णय देना चाहिए |"

महात्मा गांधी कहते हैं कि –" वह अर्थशास्त्र जो नैतिक और भावनात्मक तत्वों की उपेक्षा करता है, मधुमक्खी के ऐसे छत्ते के समान है जो जीवित होते हुए भी उसमें सचेत मांस व जीवन की कमी है |"

प्रो पीगू कहते है कि –" अर्थशास्त्र का महत्व न तो वृद्धि सम्बन्धी व्यायाम होने में है और न ही अपने लिए सच्चाई स्थापित करने के साधन में , परन्तु उसका महत्व नीतिशास्त्र की दासी तथा व्यवहार का दास होने में सन्निहित है |"

प्रो फ्रेजर कहते हैं कि-" अर्थशास्त्र केवल मूल्य –सिद्धांत अथवा संतुलन –विश्लेषण ही नहीं है , बल्कि कुछ और भी है जिसे नैतिकता से पृथक नहीं किया जा सकता है |"

इस प्रकार अर्थशास्त्रियों ने इसके अधिक व्यावहारिक होने , निर्णय लेने को उपयुक्त , अधिक बचतपूर्ण आदि की व्याख्या करते हुए यह सिद्ध किया कि अर्थशास्त्र आदर्श विज्ञान के रूप में कार्य करता है |

परन्तु अर्थशास्त्र के विज्ञानं स्वरुप की समग्रता से अध्ययन करने पर पता चलता है की अर्थशास्त्र वास्तविक व आदर्शात्मक विज्ञानं दोनों ही है | दोनों ही एक –दुसरे के पूरक हैं जो आर्थिक अध्ययन के दो पहलु के समान कार्य करते हैं | यही कारण है कि----

प्रो चैपमेन कहते हैं कि—" अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञानं के रूप में आर्थिक तथ्यों का अध्ययन करता है , नीति प्रधान विज्ञानं के रूप में तथ्य किस प्रकार के होने चाहिए का अध्ययन करता है तथा कला के रूप में इक्षित उदेश्यों की पूर्ति के साधन का भी अध्ययन करता है |"

अर्थशास्त्र कला के रूप में (ECONOMICS AS AN ART)

विज्ञान सिद्धांतों का निरूपण करती है जबकि कला उन सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने का कार्य करती है | कला वास्तविक व आदर्शात्मक विज्ञानं के बीच एक पुल के भांति कार्य कर आदर्शों की प्राप्ति के लिए उपाय व विधियां बतलाती है | किसी कार्य को उत्तम तरीके से करना ही कला कहलाती है | कला शब्द 'कृत ' धातु से

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यागमहाडॉअक्टूबर२०२०

निर्मित है जिसका अर्थ ही है किसी कार्य को बेहतर ढंग से करना |

प्रो. केन्स कहते हैं कि " कला ज्ञान की वह शाखा है जो निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीका बताती है |"

प्रो. कोसा कहते हैं कि ---" विज्ञानं हमें सैद्धांतिक ज्ञान की शिक्षा देता है . जबकि कला व्यावहारिक क्रियाओं का प्रशिक्षण देती है |"

इस प्रकार विज्ञान केवल व्याख्या करता है जबकि कला लक्ष्यों की प्रप्ति के लिए नियम का प्रतिपादन करती है | स्पष्ट है कि सैद्धांतिक ज्ञान के साथ –साथ व्यावहारिक ज्ञान का होना अत्यंत ही आवश्यक है |

इसलिए प्रो पीगू का कहना है कि " अर्थशास्त्र न केवल ज्ञान का ही प्रकाश देता है वरन वह फलदायक भी है "|

अतः कला तथा विज्ञानं दोनों ही एक दुसरे के पूरक हैं | ऐसे में , यह कहना अतिश्योक्ति नहीं की अर्थशास्त्र कला तथा विज्ञानं दोनों है | प्रकाशदायक होने के नाते विज्ञानं है जबकि फलदायक होने के नाते कला है | अर्थशास्त्र विषय के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों ही पक्षों का अध्ययन करता है | सैद्धांतिक पक्ष वैज्ञानिक स्वरुप का अध्ययन करता है जबकि व्यावहारिक पक्ष कला का |

प्रो सेम्युल्सन के अनुसार ---" अर्थशास्त्र कला समूह में प्राचीनतम तथा विज्ञानं समूह में नवीनतम वस्तुतः सभी सामजिक विज्ञानों की रानी है |"

(स) अर्थशास्त्र की सीमाएं (LIMITATIONS OF ECONOMICS)

अर्थशास्त्र की सीमाओं के अंतर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि अर्थशास्त्र में मुख्य रूप से क्या –क्या सम्मिलित किया जाना चाहिए और क्या –क्या नहीं |

✓केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन |
✓केवल वास्तविक व्यक्तियों का अध्ययन |
✓केवल सामान्य मनुष्य की क्रियाओं का अध्ययन |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्याजगमाहअक्टूबर२०२०

✓केवल सामाजिक मनुष्यों का अध्ययन |
✓आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन |
✓प्रत्येक क्रिया के आर्थिक पहलु का अध्ययन |
✓क़ानूनी सीमाओं के अंतर्गत आने वाले व्यक्तिओं का अध्ययन |
✓आर्थिक नियम कम निश्चित
✓अर्थशास्त्र विज्ञानं तथा कला दोनों ही है |
✓दुर्लभ पदार्थों का अध्ययन |

सन्दर्भ

- ए.सी .पीगू – इकोनॉमिक्स ऑफ़ वेलफेयर , पृष्ठ संख्या -०७
- रॉबिन्स (१९३२)- एन ऐसे ओन द नेचर एंड सिग्निफिकेंस ऑफ़ इकोनॉमिक्स
- जे .एम् . केन्स –स्कोप एंड मेथड ऑफ़ पोलिटिकल इकॉनमी , पृष्ठ संख्या -१६
- कोसा – एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ़ पोलिटिकल इकॉनमी , पृष्ठ संख्या -२१३
- अल्फ्रेड मार्शल –अर्थशास्त्र के सिद्धांत
- वाचस्पति गैरोला –कोटिल्य का अर्थशास्त्र
- जे.के .मेहता –स्टडीज इन एडवांस्ड इकनोमिक थ्योरी
- एलेग्जेंडर ग्रे –आर्थिक सिद्धांत का विकास

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह३अक्टूबर२०
२०